- प्रस्तावना
- संम्वंधित साहित्य का अर्थ
- संम्वंधित साहित्य के अध्ययन का महत्व
- संम्वंधित साहित्य के सर्वेक्षण का कार्य
- संम्वंधित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ
- संम्वंधित साहित्य के पुनरावलोकन का विशिष्ट उद्धेश्य
- संम्वंधित शोध कार्यों का पुनरावलोकन

अध्याय - द्वितीय

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

संम्वंधित साहित्य का पुनरावलोकन

(2.1) प्रस्तावनाः—

संवंधित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में, चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो, चाहे सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो, संवंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारंभिक कदम है। समस्या से संवंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणवत्ता स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

(2.2) संवंधित साहित्य का अर्थ :—

संम्वंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संम्वंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों ,ज्ञान कोषें,पत्र – पत्रिकाओं ,प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रवंधों एवं अभिलेंखों आदि से है, जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पाओं के निर्माण,अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

(2.3) संवंधित साहित्य के अध्ययन का महत्व :—

वस्तुतः संम्वंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंन्धानकर्ता का कार्य अंन्धे के तीर के समान होता है। इसके अभाव में उचित दिशा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को संम्पन्न ही कर सकता है।

अतः इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए निम्न लोंगों ने अपनी परिभाषा दीः—

" एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संम्वधी आधुनिकता खोजों से परिभाषित होता रहे , उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुंसंन्धान के लिए भी उस क्षेत्र से संम्वंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है"

गुड़,बार एवं स्केट्स :—

(2.4) संवंधित साहित्य के सर्वेक्षण का कार्य :–

इसके निम्न कार्य हैं :–

- ❖ यह अनुसंन्धान के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है ।
- ❖ इसके द्धारा यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या –क्षेत्र में अनुसंन्धान की स्थिति क्या है ? क्या, कब, कहाँ,. किसके और कैसे अनुसंन्धान कार्य किया है ? इसकी जानकारी देता है।
- ❖ संम्वंधित साहित्य का सर्वेक्षण, अनुसंधान के लिए अपनायी जाने वाली विधि प्रयोग में लाये जाने योग्य उपकरण तथा आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रयोग में आने वाली उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।
- ❖ इसका महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण ,अवधारणा बनाने , समस्या के सीमांकन और परिकल्पना के निर्माण में सहायता करना है।

(2.5) संवंधित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ :–

साहित्य के सर्वेक्षण से अनुसंधानकर्ता को निम्नलिखित लाभ होता है :–

- ➢ अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना देता है।
- ➢ यह समस्या के चुनाव ,विश्लेषण एवं कथन में सहायक होता है।
- ➢ अनुसंधानकर्ता के समय की बचत करता है ।
- ➢ इससे अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।
- ➢ यह अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता हैं ।

(2.6) संवंधित साहित्य के पुनरावलोकन का विशिष्ट उद्धेश्य :–

संवंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधारक को किस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला हैं, उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचय कराती हैं, तथा निम्न विशिष्ट उद्धेश्य पूर्ण करती हैं।

- ◆ संवंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधारक को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
- ◆ उपयुक्त शोध विधियों के चयन में मदद करता है।
- ◆ परिकल्पना अध्ययन व तत्संवंधी व्याख्या हेतु आंकड़ों का निर्धारण करने में मदद करता है।

(2.7) संबंधित शोध कार्यों का पुनरावलोकन :–

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता उन्नयन तथा शैक्षिक प्रबंध के विकेन्द्रीकरण की दिशा में मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सबसे उपलब्धि देश भर में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना है।

इस संदर्भ में संबंधित प्राप्त साहित्य एवं शोध कार्यों का विवरण निम्नलिखित है :–

मालवीय (1968):–

इनके द्वारा " म0प्र0 में शिक्षक –प्रशिक्षण " यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया। इस अध्ययन का मुख्य उद्धेश्य था शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आधुनिक चलन और म0प्र0 में शिक्षक प्रशिक्षण की समस्या को उजागर करना इसके प्रमुख निष्कर्ष थे।

- ❖ शिक्षक का अच्छा समन्वय शिक्षक –प्रशिक्षण कार्यक्रम को अधिक प्रभावशाली बनाता है।
- ❖ स्कूल के निरीक्षक तथा सामाजिक अनुसंधानकर्ता के प्रशिक्षण का कोई प्रावधान नहीं है।
- ❖ पारंपरिक विधि और शोध में कोई विस्तार नहीं हैं।
- ❖ मूल्यांकन तकनीक अकसर नियम वद्ध होती है और बहुत अधिक असमानताएँ इसके आंतरिक और बाह्य मूल्यांकन में दिखाई देती है।
- ❖ चूकिं म0प्र0 एक प्रधान देश है ,इसलिए ग्रामीण विकास के कुछ क्रियाकलाप शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में जोड़ने चाहिए ।
- ❖ राज्य के शिक्षक संस्थानों में उपयुक्त पुस्तकालय सुविधा नहीं हैं ।

गुप्ता (1982):–

इन्होंने " पंजाब के कुछ चयनित प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के इनपुट व आउटपुट के संवंधों का अध्ययन " कियां ।

इसके प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थें :–

- ➢ इनपुट जैसे शिक्षक प्रशिक्षकों की अकादमिक अभिप्रेरणा की गुणवत्ता नेतृत्व के तरीकों ,संगठनात्मक वातावरण,प्रशिक्षण विधि , भौतिक सुविधाएं और आउटपुट जैसे परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों के बीच महत्वपूर्ण सहसंवंध पाया जाता है।

- प्रयोगिक प्राप्तांकों के रूप में इनपुट व आउटपुट के बीच सार्थक सहसंवंध नहीं पाये गये।

पाटिल (1988) :–

इन्होंने "राष्ट्रीय शिक्षा नीति हेतु वृहद् प्रशिक्षण कार्यक्रम का महाराष्ट्र प्रांत के धुले जिले के प्राथमिक व माध्यमिक शाला के शिक्षकों का अध्ययन " शीर्षक के अंतर्गत लधु शोध किया। अध्ययन के उद्धेश्य राष्ट्रीय एकता लाने में शिक्षकों द्वारा वर्तमान पाठ्यक्रम के उपयोग का अध्ययन, शिक्षकों द्वारा बालकों में राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास की विधियों का अध्ययन बालकेद्रित अधिगम की गतिविधियेां में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन था।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :–

- राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करने के लिए सामाजिक समानता होनी जरूरी है।
- छात्रों का मूल्यांकन का सर्वोत्तम प्रकार मासिक मूल्यांकन हैं।
- मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठ पर अधिक महत्व दिया गयां हैं।
- प्रशिक्षण की अवधि कम थी।
- छात्रों में सृजनात्मकता का विकास क्रियाओं को आयोंजित करके किया जाता हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षण निरंतर होते रहने चाहिये।

तिवारी (1991) :–

इन्होंने म.प्र.में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया। "इस अध्ययन का मुख्य उद्धेश्य था, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जिन उद्धेश्यों की पूर्ति के लिये प्रारंम्भ किये गये थे। वे कहाँ तक सफल हुये हैं।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :–

- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान शहर से 1 कि.मी. से 10 किलो.मी. की दूरी पर स्थित हैं ।
- अलग–अलग विभागों की समस्या में सबसे बड़ी समस्या स्टाफ की कमी है।

- म.प्र. के वैकल्पिक ढ़ाँचे द्वारा म.प्र. के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के लिए प्रस्तावित ग्यारह शाखायें किसी भी संस्थान में कार्यरत नहीं है।
- प्रचार्य केवल बारह संस्थानों में नियुक्त व शेष संस्थानों में नियुक्त में प्रचार्य प्राभारी का कार्य देख रहें हैं।
- पूर्व सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिये नया पाठ्यक्रम लागू हो गया है और उसमें छः विषयेां को स्थान दिया गया है।
- शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण शासन के आदेशानुसार आयेाजित होते है।

राजपूत (1996):–

इन्होनें शिक्षक –प्रशिक्षण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू " नामक प्रवंध में निम्न बिन्दुओं पर प्रकाश ड़ाला है:–

शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन प्रशिक्षण का महत्व प्रशिक्षण का मनोवैज्ञानिक आधार ,तकनीकी शिक्षा में प्रशिक्षण, शिक्षा के वर्तमान ,स्वरूप में प्रशिक्षण की अनिवार्य, शैक्षिक प्रशिक्षण की गुणवत्ता बनाए रखने में सरकार की भूमिका ,मा.शिक्षा मंण्ड़ल एवं शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

गुप्ता (1996):–

इन्होने शहड़ोल शिक्षा एवं प्रशिक्षण शिक्षा मंण्ड़ल का कार्यात्मक अध्ययन"। इस अध्ययन के मुख्य उद्धेश्य थे:ड़ाइट का कार्यात्मक विश्लेषण करना ,ड़ाइट की कमजोरियों और कमियेां से अवगत कराना,डी.पी.ई.पी. के संदर्भ में ड़ाइट के कार्यों का अध्ययन करना तथा ड़ाइट की कार्यक्षमता तथा उसकी कार्यविधि में सुधार हेतु सुक्षाव देना था।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :–

- शिक्षा के सार्वजनीकरण तथा साक्षरता के लिए डाइट की राष्ट्र के विकास में क्रियात्मक सुधार करने की आवश्यकता है।

भदौरिया (1997–98):–

विदिशा स्थिति जिला शिक्षा संस्थान की कार्यप्रणाली का एकक वृत अध्ययन " शीर्षक के अंन्तर्गत लधु शोध किया। जिसका उद्धेश्य निम्नलिखित है:–

- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान का भौतिक संसाधनों व स्टाफ की जानकारी प्राप्त करना।
- ड़ाइट की समस्याओं व कमियेां का अध्ययन करना।

- ड़ाइट की समस्याओं व कमियेां का अध्ययन करना।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :–

- अधिकांश स्टाफ प्रतिनियुक्त एवं संविदा नियुक्ति पर कार्यरत है।
- समस्त अकादमिक स्टाफ उच्च शैक्षिक येाग्यता एवं अनुभव रखता है।
- वित्तीय सहायता हेतु संस्थान पूर्ण रूपेण N.C.E.R.T. पर निर्भर है।
- प्रशिक्षणार्थियों को समस्त भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध है ,परंन्तु छात्रावास की दूरी अंधिक है।
- ड़ाइट के सेवा पूर्व प्रशिक्षार्थियेां में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अत्यधिक उच्च सकारात्मक शिक्षक अभिवृत्ति पाई गयी।

एन .वेक्टैपाह (1996):–

इन्होंने "जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रदान किये गये आंतरिक साधनों का अध्ययन योग्यता पर प्रभाव का अध्ययन"

उपरोक्त अध्ययन में ड़ाइट के पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों पर आंतरिक साधनों का सुविधा प्रदान का प्रभाव देखना हैं।

इस अध्ययन के प्रमुख उद्धेश्य इस प्रकार है :–

- पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों की अध्ययन योग्यता पर प्रशिक्षण स्टाफ के प्रभाव का अध्ययनं।
- पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों की अध्ययन योग्यता पर छात्रों की व्यक्तिगत सेवा के प्रभाव का अध्ययन ।
- पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों की अध्ययन येाग्यता पर शैक्षिक सुविधाओं के प्रभाव का अध्ययन ।
- पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों की अध्ययन योग्यता पर सहपाठ्यक्रम प्रवृत्तियों के प्रभाव का अध्ययन ।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :–

- कम स्टाफ वाले ड़ाइंट में प्रशिक्षणार्थियेां की अध्ययन क्षमता अच्छी है, जबकि पूर्ण स्टाफ वाले ड़ाइट में अध्ययन क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है, ड़ाइट गाइड़ लायन्स के निर्देशानुसार पूर्ण सेवाकालीन प्रशिक्षण में 9 अध्यापक होने चाहिए, लेकिन जिस ड़ाइट में 9

अध्यापक नहीं है,इसमें भी प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन योग्यता में बढ़ोत्तरी होती है।

- विषय के अंतर्गत प्रशिक्षणार्थियों को सिखाया गया है तथा टयूटोरियल प्रणाली की सुविधा दी जाती है वहाँ पर प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक योग्यता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
- राज्य सरकार द्धारा अकादमिक सुविधा, सेमिनार, खंण्ड़, फिजिकल साइन्स प्रयोगशाला, जीव विज्ञान प्रयोगशाला, शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा पुस्तकालय आदि की जिस ड़ाइट में अच्छी सुविधा है वहाँ प्रशिक्षाणार्थियों की शैक्षिक योग्यता वेहतर है।
- अधिकांश स्टाफ प्रतिनियुक्त एवं संविदा नियुक्ति पर कार्यरत हैं।
- समस्त अकादमिक स्टाफ उच्च शैक्षणिक एवं अनुभव रखता है।
- वित्तीय सहायता हेतु संस्थान पूर्ण रूपेण N.C.E.R.T. पर निर्भर है।
- प्रशिक्षणार्थियों को समस्त भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं ,परंन्तु छात्रावास की दूरी अधिक है।
- ड़ाइट के सेवा पूर्व सकारात्मक प्रशिक्षाणार्थियों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अत्यधिक उच्च सकारात्मक शिक्षक अभिवृत्ति पाई गयी।

कुलश्रेष्ठ (2002–03) :–

प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता सुधार हेतु भोपाल जिला संभाग के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षण –प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन शीर्षक के अंन्तर्गत लधुशोध किया ,जिसके उद्धेश्य निम्नलिखित है :–

- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में शिक्षण प्रशिक्षकों तथा शिक्षकों के विचारों ,मतों का अध्ययन करना।
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पर संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवहारिकता का अध्ययन करना।
- जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों से सेवापूर्ण तथा सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन करना।

- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार हेतु किन विधियों एवं दक्षताओं का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, इसका अध्ययन करना।
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण में प्राप्त विधियों को कक्षा में लागू करने में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :–

- प्रशिक्षण हेतु सभी प्राथमिक शिक्षकों को अवसर मिलना चाहिए, साथ ही बारी – बारी से सभी के लिए प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।
- सभी शिक्षकों को शिक्षक प्रशिक्षण के प्रति प्रोत्साहित करना चाहिए,क्योकि कई शिक्षक इसे आवश्यक ही नहीं समक्षते है।

सोलंकी (2005–06):–

इन्होंने " सर्व शिक्षा अभियान के अंन्तर्गत गुजरात में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की सहायता एवं उपयोगिता का अध्ययन" इस विषय पर अध्ययन किया।

इस अध्ययन के प्रमुख उद्धेश्य इस प्रकार हैं :–

- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में लिंग के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना ।
- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में लिंग के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना ।
- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में व्यवसायिक योग्यता के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना ।
- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में व्यवसायिक योग्यता के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना।
- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना ।
- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना।

- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में कलस्टर के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना ।
- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में कलस्टर के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना।
- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में क्षेत्र के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना।
- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में क्षेत्र के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :–

- ⇨ सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में लिंग का प्रशिक्षण सहायता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। प्रशिक्षण के नांमांकन एवं जेन्ड़र शिक्षा के प्रशिक्षण पर लिंग का प्रभाव दिखाई दिया। इसका शेष प्रशिक्षण धटकों पर लिंग का प्रभाव नहीं दिखाई दिया।
- ⇨ शिक्षकों में लिंग का प्रशिक्षण उपयोगिता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। प्रशिक्षण के धटकों पर भी लिंग का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया ।
- ⇨ शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक योग्यता का प्रशिक्षण सहायता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।
- ⇨ योग्यता का गुणवत्ता व्यवस्थापन धटक पर प्रभाव पड़ता है। शेष धटकों में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- ⇨ शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण सहायता पर प्रभाव पाया गया। 10 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षक में ज्यादातर शिक्षा सहायता वेतन से अंसंतुष्ट है । शिक्षा सहायकों को माह का 2500/– रू. मिलता है। प्रशिक्षण सहायता के वैकल्पिक धटक में अनुभव का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया।
- ⇨ अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता में कोई प्रभाव नहीं पाया गया। प्रशिक्षण उपयोगिता के वैकल्पिक शिक्षा ,टी.एल.एम.,

विकलांग शिक्षा एवं गुणवत्ता व्यवस्थापन धटकों पर अनुभव का प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

- ⇨ शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कलस्टर संवंधित प्रशिक्षण सहायता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। कलस्टर का प्रशिक्षण सहायता के धटकों पर भी कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया।
- ⇨ कलस्टर संवंधित प्रशिक्षण उपयोगिता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। प्रशिक्षण उपयोगिता बालमेला, विकलांग, जेन्ड़र शिक्षा के धटकों पर कलस्टर का प्रभाव दिखाई दिया। शेष धटकों पर कोई प्रभाव दिखाई नहीं दिया।
- ⇨ ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का प्रशिक्षण सहायता में कोई प्रभाव नहीं पाया गया है। प्रशिक्षण सहायता का वैकल्पिक शिक्षा धटक पर क्षेत्र का प्रभाव दिखाई दिया, शेष धटकों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया गया।
- ⇨ ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का प्रशिक्षण उपयोगिता में कोई प्रभाव नहीं पाया गया है, प्रशिक्षण उपयोगिता के धटकों पर भी क्षेत्र का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

शर्मा (2005–06):–

इन्होंने " शिक्षक प्रशिक्षण का कक्षागत प्रक्रिया पर प्रभाव" के विषय पर अध्ययन किया ।

अध्ययन के प्रमुख उद्धेश्य इस प्रकार थे :–

छात्रों को उपलब्धि की जानकारी प्राप्त कर कठिन विन्दु चिन्हित कर शैक्षिक प्रक्रिया मे गति प्रदान करना है । प्राप्त अवरोधक तत्वों के आधार पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आंशिक संशोधन करना है।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :–

- ⇨ विश्लेषणों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किया जायेगा तथा अवरोधों को समाप्त करने हेतु शासन से अनुरोध किया जावेगा तथा शिक्षक प्रशिक्षणों में अवरोधों पर परिचर्चा की जाने हेतु अनुशंसा की जावेगी ।